International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 6, Issue 1, January 2019
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कुमार गन्धर्व : कबीर–गायन परम्परा के अमर गायक

आरती पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
ई–मेल– arati.6007@gmail.com

शोध सारांश : कबीर–गायन की परम्परा कबीर के समय से ही निर्बाध रूप से चली आ रही है। स्वयं कबीर ने भी तब अपने साखियों और उलटबासियों के वाचन से बड़े–बड़े समूह को प्रभावित किया था। कबीर के बाद तो उनकी साखियों और उलटबासियों के गायन की परम्परा और भी समृद्ध हुई। कबीर–गायन की इस परम्परा में पंडित कुमार गन्धर्व का नाम खूब प्रसिद्ध हुआ। भारत की शास्त्रीय गायन की परम्परा में उन्होंने कबीर को स्थापित करने का काम किया; सिर्फ स्थापित ही नहीं बल्कि शास्त्रीय गायन में लोकधुनों के सामंजस्य के साथ कबीर–गायन और साथ ही साथ भजन–गायन की एक नई शैली भी विकसित की। कुमार गन्धर्व ने न सिर्फ कबीर को गाया बल्कि अपने संगीत की जीवन–यात्रा में उन्हें जिया भी। कबीर–सा साहस लेकर उन्होंने भी शास्त्रीय गायन की परम्परा में कई मौलिक प्रयोग किए। उनके इसी मौलिक प्रयोग ने उन्हें कबीर–गायन की परम्परा में अमर बना दिया। कुमार गन्धर्व कबीर–गायन परम्परा में एक मौलिक हस्ताक्षर के रूप में स्थापित हुए।

बीज शब्द : कबीर, कबीर–गायन, शास्त्रीय संगीत व गायन, पंडित कुमार गन्धर्व, देवास, लोकधुन

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मूल लेख

कबीर–गायन की परम्परा कबीर के समय से ही निर्बाध रूप से चली आ रही है। स्वयं कबीर ने भी तब अपने साखियों और उलटबासियों के वाचन से लोगों के बड़े–बड़े समूह को प्रभावित किया था। निर्गुण संतों की वाणियों के गायन की परम्परा अतिप्राचीन रही है, पर भारतीय लोक में जो स्थान कबीर की निर्गुण–वाणियों को मिला, उतना शायद अन्य किसी भी संत को नहीं। कबीर के बाद तो उनकी साखियों और उलटबासियों के गायन की परम्परा और समृद्ध हुई। भोजपुरी क्षेत्रों में कबीर–गायन की परम्परा सुदृढ़ रही है। इसके अलावा कबीर के सभी मठों में कबीर–गायन की परम्परा आवश्यक रूप से देखने को मिलती है। अभी के समय में कबीर के गाने वालों की संख्या हजारों में है। इसमें न सिर्फ लोक गायक हैं बल्कि पार्श्व गायक से लेकर आधुनिक रॉक–बैंड तक के नाम शामिल हैं। कबीर के निर्गुण गाने वालों में सुकृतदास, संत रामप्रसाद दास 'बालयोगी', संत रामचरण दास के अलावा भोजपुरी गायकों में भरत शर्मा और मदन राय तथा 'भारती बंधु' और कालूराम बामनिया जैसे गायक जो अंतराष्ट्रीय पटल पर भी अपने कबीर–गायन को लेकर प्रसिद्ध हैं– का नाम उल्लेखनीय है। भारती बंधु के कबीर–गायन की 'भारत बंधु शैली' भारत के बाहर भी प्रसिद्ध है। इन्हें इनकी गायकी के लिए 2013 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान भी प्रदान किया गया है। इसके अलावा कई ऐसे बैंड हैं जो नई पीढ़ी के युवाओं के बीच कबीर के विचारों को अपने गायन के माध्यम से ले जा रहे हैं। इनमें से नीरज आर्या की 'कबीर कैफे' और 'कबीर रॉक' के साथ–साथ 'कबीर कला मंच' का भी नाम उल्लेखनीय है।

लोक संगीत समारोह में अक्सर कबीर को गाने वाले गायक या गायकों की मंडली या बैंड होती ही है। 'राजस्थान कबीर यात्रा' कबीर–गायन का एक बड़ा मनमोहक अवसर है। कबीर–गायन की आत्मीय झलक उत्तर भारत के कई पर्व–त्यौहारों में भी दिखाई पड़ती है। होली के समय फगुआ और चैती–गायन में कबीर की साखियों और उलटबासिया को बड़े आनंद के साथ गया जाता है।

कबीर–गायन परम्परा की इस यात्रा में अभी तक कई बदलाव और मोड़ देखने को मिले। इसी यात्रा में एक सबसे बड़ा मोड़ देखने को मिलता है पंडित कुमार गन्धर्व के इस क्षेत्र में पदार्पण के बाद। उन्होंने न सिर्फ कबीर को गाया ही बल्कि अपनी संगीत–जीवन की यात्रा में कबीर को जीकर भी दिखाया।

इनका जीवन भी कबीर की तरह संघर्षों से भरा रहा। इसका सबसे बड़ा प्रसंग है कुमार गन्धर्व का 'देवास' प्रस्थान। पहले तपेदिक और फिर एक फेफड़ा ख़राब हो जाने के कारण इन्हें मुम्बई छोड़ कर देवास प्रस्थान करना पड़ा। डॉक्टर ने गाने की पूरी पाबंदी लगा दी। कई वर्षों तक इन्हें गायन से दूर रहना पड़ा। दोबारा 1953 में जाकर इन्होंने गाना शुरू किया।

कुमार गन्धर्व के जीवन में देवास प्रस्थान किसी आपदा में अवसर के रूप में साबित हुआ। देवास प्रवास ने कुमार गन्धर्व को बहुत कुछ दिया। हालाँकि, वे मुम्बई से देवास मजबूरीवश ही गए थे, लेकिन इस स्थानिक अलगाववाद की मनःस्थिति में भी उन्होंने खुद को सृजनशील बनाए रखने का प्रयास किया। देवास में उन्हें मुख्य रूप से दो चीजें उपहारस्वरूप मिलीं और इन्हें कुमार गन्धर्व ने अपने जीवन में आत्मीय और ईमानदारीपूर्वक आत्मसात किया। यही दो उपहार आगे चल कर इनकी प्रसिद्धि के सबसे बड़े कारक बने।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

इस सन्दर्भ में कुमार गन्धर्व स्वयं कहते हैं कि "दरअसल, देवास आया, दो चीजें मिलीं– मालवी लोक धुन और नाथ सम्प्रदाय का संत साहित्य। अपन दोनों के साथ जुड़ गए।"[1] इस बात में शायद ही कोई नकार हो कि कुमार गन्धर्व के जीवन में 'देवास' सबसे महत्त्वपूर्ण प्रसंग है। ऐसा इसलिए भी हैं क्योंकि यहीं उन्हें लोक धुन और नाथ सम्प्रदाय के निर्गुण भजन मिले और यही इसके बाद उनके जीवन का सबसे मुख्य आधार बना। ये गन्धर्व के जीवन में इस कदर महत्त्वपूर्ण हुए कि वे इसे अपने दूसरे फेफड़े की संज्ञा देते हैं। स्वयं उनके ही शब्दों में– "देवास न रहता तो शायद ये सब नहीं होता। लोक धुनों और नाथ सम्प्रदाय के निर्गुण ने ही मुझे जीवन दिया, यही मेरा दूसरा फेफड़ा है जो अधिक क्रियाशील है।"[2] फेफड़े की खराबी के कारण लंबे समय तक गायन से दूर होना कुमार गन्धर्व के लिए किसी प्रकोप से कम न था, लेकिन निर्गुण वाणी के गायन के प्रति इनकी लालसा ने इन्हें फिर से एक नया जीवन प्रदान किया।

कुमार गन्धर्व ने कबीर के अलावा भी कई निर्गुण संतों के पद गाए, पर उन्हें विशेष ख्याति मिली कबीर के पदों के गायन से। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि स्वयं कुमार गन्धर्व का जीवन कबीर के जीवन से मेल खाता हुआ प्रतीत होता है। कुमार गन्धर्व का संगीत–जीवन मौलिकता और अन्वेषण से आच्छादित रहा। वे कई मायनों में परम्परा से हट कर चले। कबीर की ही तरह अपनी संगीत–यात्रा में उन्होंने विद्रोही रूप को अपनाया। जिस शैली के साथ चलने का मन किया उसके साथ चले, परम्परा और निंदा की परवाह किए बगैर। इन्होंने सर्वप्रथम घराना–परम्परा से खुद को अलग रखते हुए अपनी संगीत–साधना ज़ारी रखी। वहीं, दूसरी तरफ पारम्परिक विलम्बित ख्याल गायकी की शैली के पार जाते हुए इन्होंने अपनी एक नई निजी शैली विकसित की। इसे एक

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

तरफ लोगों ने सराहा भी तो दूसरी तरफ इसकी थोड़ी–बहुत आलोचना भी हुई। इनकी गायन शैली 'मध्य लय' से आच्छादित रही।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जिस प्रकार कबीर की भाषा के बारे में बात करते हुए लिखते हैं कि "भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को जिस रूप में प्रकट करना चाहा उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया– बन गया है तो सीधे–सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।"[3] ठीक उसी प्रकार, गन्धर्व के सन्दर्भ में डॉ. अशोक कुमार 'यमन' के इस कथन को उल्लेखित करने में कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि "कुमार गन्धर्व इन अर्थों में साधक नहीं अन्वेषक हैं। उनकी यह अन्वेषक प्रतिभा ही उन्हें भारतीय संगीत का कबीर बनाती है तथा उन्हें दूसरे गायकों की तुलना में अधिक स्वतंत्र–मुक्त और फक्कड़ होने का गौरव प्रदान करती है। कुमार गंदर्भ के रागों, स्वरों और संयोजनों में ही उलट–फेर नहीं किया है, उन्होंने संगीत के लिए नई अमर बंदिशें भी खोजी हैं।"[4] लोक संगीत को भारतीय संगीत का मूलाधार मानने वाले कुमार गन्धर्व ने कबीर के गीतों को लोक संगीत में पिरोकर उसे अमर बनाने का काम किया। वे जीवनपर्यंत अपने गायन में लोकधुनों के सामंजस्य की साधना का प्रयास करते रहे। जिस प्रकार, कबीर ने 'संसकिरत है कूप जल' कहते हुए 'भाखा बहता नीर' का पान किया उसी प्रकार, कुमार गन्धर्व ने परम्परा से चले आ रहे शास्त्रीय गायन में भजन और उसे भी लोक धुन के सामंजस्य के साथ गाकर कबीर–सा ही फक्कड़ होने का परिचय दिया। इसी मौलिकता ने उन्हें न सिर्फ प्रसिद्धि प्रदान की बल्कि शास्त्रीय गायन की परम्परा में भी उन्हें एक मौलिक हस्ताक्षर के रूप में स्थापित किया। शास्त्रीय गायन के साथ लोक धुन के सामंजस्य के विषय में कुँवर

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

नारायण बहुत ही अच्छी बात कहते हैं कि ''कुमार गन्धर्व के गायन में शास्त्रीय संगीत की परम्परा और लोकगीतों की प्रामाणिकता का एक भिन्न ही रूप सामने आता है।''[5]

कुमार गन्धर्व को जो भी चीज परम्परा से मिली उसे उन्होंने उसी रूप में न परोस कर उसमें मौलिक प्रयोग करने की कोशिश की। उन्हें जो मिला उससे संतुष्ट होकर बैठ नहीं गए बल्कि हमेशा उसमें मौलिकता का समावेश करने के लिए प्रयत्नशील रहे। स्वयं उनके इस कथन से इस बात की पुष्टि की जा सकती है– ''जहाँ से भी जा भजन मिलता, अभंग मिलता, उन्हें अपने पास सहेज लेता और तलाशता कि उन्हें नया रूप कैसे दिया जाए।''[6] मौलिकता की इस चाहत के कारण भी इन्होंने शास्त्रीय गायन में भजन गायकी को चुना। शास्त्रीय गायन से सम्बद्ध रहने के बावजूद भजन या फिर निर्गुण वाणियों का गायन कुमार गन्धर्व की लोकवादिता का भी परिचय देता है। यह उनकी लोकवादिता का ही परिणाम है कि उन्होंने अपनी गायकी में कबीर, तुलसी, सूर और मीरा जैसे भारतीय लोक में रचे–बसे कवियों के पदों को गायन के लिए चुना। कुमार गन्धर्व द्वारा शास्त्रीय गायन में भजन गायकी के सन्दर्भ में डॉ. अशोक कुमार 'यमन' एक बड़ी बात कह जाते हैं, जो कुमार गन्धर्व के लिए बिलकुल स्वाभाविक और सच जान पड़ती है– ''उन्होंने भजन को कला स्तर पर प्रतिष्ठित किया और उसे सांगीतिक चिंतन का माध्यम बना दिया। ख्याल या ठुमरी की भांति भजन भी संगीत का एक अंग हा गय।''[7]

कबीर के भजन ने कुमार गन्धर्व को शास्त्रीय संगीत के बुर्जुआ श्रोताओं के बीच से बाहर निकाल कर उन्हें लोक के सामान्य श्रोताओं के बीच भी स्थापित किया। शास्त्रीय गायन परम्परा में ऐसा विस्तार कम ही गायकों को नसीब हुआ है। मध्यप्रदेश के रहने वाले और कुमार गन्धर्व के समकालीन और उन्हें नजदीक से सुनने वाले प्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार

प्रभाष जोशी इस सन्दर्भ का और भी अच्छी तरह से मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि "कबीर के भजन गाने में जो चमत्कार कुमार जी ने पाया वह न तो उनके पहले गायकों में सुना गया और न आज के गायकों में। एक तान में ही वे सुनने वाले को अनहद के बीहड़ एकांत में पहुँचा देते थे। उनका गाया कबीर, कबीर के जितने पास जाता है उतना कोई गायक नहीं ले जाता। वह सीखा और रियाज से साधा गया गायन नहीं है।"[8] प्रभाष जोशी कुमार गन्धर्व के प्रभाव के फलस्वरूप जिस एकांत को रेखांकित करते हैं उसे हिन्दी के वरिष्ठ कवि और कला–चिंतक अशोक वाजपेयी 'शून्य' का नाम देते हुए लिखते हैं कि– "कबीर जैसे क्रान्तिकारी कवि की रचनाएं गाते समय कुमार गन्धर्व जिस शून्य का निर्माण करते हैं, और फिर जैसे उस शून्य को वस्तुओं से भर देते ह, वह विस्मयकारी होने के साथ–साथ कविता की अपनी रचना–प्रक्रिया से बहुत मिलता–जुलता है।"[9] यह तमाम सारे प्रभाव हम कुमार गन्धर्व को सुनते हुए स्वाभाविक रूप से महसूस करते हैं, चाहे वो 'सुनता है गुरु ज्ञानी...', सांवरे आई जइयो..., झीनी झीनी बीनी चदरिया हो या फिर 'भोला मन जाने अमर मेरी काया'...उड़ जाएगा हंस अकेला और 'निर्भय निर्गुण गुण रे गाऊंगा...।' कई बार तो ऐसा होता है कि ये बिना एक शब्द गाए हमें अपनी ओर खींच कर बाँध लेते हैं। 'उड़ जाएगा हंस अकेला...' भजन में अलाप की शुरुआत को सुन कर हर श्रोता कुछ ऐसा ही महसूस करता है।

इस प्रकार, कुमार गन्धर्व एक मौलिक गायक के रूप में कबीर–गायन की परम्परा में आए और अपनी आवाज़ और लोक–धुनों से खुद को अमर गायक बना दिया। कबीर के जीवन और उनके विचारों को गुनने के अलावा उन्होंने जिस प्रकार से उसे अपने जीवन मे उतारा, यह उन्हें एक महान आत्मा के रूप में स्थापित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चटर्जी, गौतम, शिखर से संवाद, गुडगाँव, पेंगुइन, 2014
2. 33, 33, शिखर से संवाद, गुडगाँव, पेंगुइन, 2014
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 170
4. 'यमन', डॉ. अशोक कुमार, आधुनिक भारतीय संगीत का इतिहास, नई दिल्ली, कल्पना प्रकाशन, 2021 पृष्ठ 126
5. कुँवर नारायण रू संसार, सम्पादक यतीन्द्र मिश्र, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002, पृष्ठ 421
6. चटर्जी, गौतम, शिखर से संवाद, गुडगाँव, पेंगुइन, 2014
7. 'यमन', डॉ. अशोक कुमार, आधुनिक भारतीय संगीत का इतिहास, नई दिल्ली, कल्पना प्रकाशन, 2021 पृष्ठ 127
8. जोशी, प्रभाष, जीने के बहाने, सम्पादक सुरेश शर्मा, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008 पृष्ठ 373
9. अशोक वाजपेयी : चुनी हुई रचनाएं–2, सम्पादक मदन सोनी, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2001 पृष्ठ 293